Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

17

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श और पारिवारिक रिश्ते

डॉ. रमेश टी. बावनथड़े
सहयोगी प्राध्यापक हिंदी विभाग प्रमुख
भवभूती महाविद्यालय, आमगांव जि. गोंदिया, महाराष्ट्र

सारांश

मन्नू भंडारी हिंदी कथा साहित्य की एक प्रख्यात लेखिका हैं, जिनका लेखन आधुनिक हिंदी कहानी के विकास में मील का पत्थर माना जाता है। उन्होंने स्त्री जीवन के बहुआयामी पक्षों को गहन संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से स्त्री की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक जीवन की जटिलताओं तथा दांपत्य संबंधों की उलझनों को उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण से चित्रित किया है। उनकी कहानियाँ केवल स्त्री की पीड़ा का बयान नहीं करतीं, बल्कि उसके संघर्ष, आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय की आकांक्षा को भी स्वर देती हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य हिंदी कथा परंपरा में स्त्री-विमर्श का एक सशक्त दस्तावेज़ बनकर सामने आता है।

भंडारी के कथा साहित्य का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह है कि उनकी नायिकाएँ मात्र गृहिणी की पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं। वे अपने परिवेश से सवाल करती हैं, पुरुष-प्रधान समाज द्वारा निर्धारित मानदंडों को चुनौती देती हैं और स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में उभरने का प्रयास करती हैं। यही सच है, आपका बंटी और त्रिशंकु जैसी कृतियाँ इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं, जिनमें स्त्री पात्र आत्मनिर्णय की आकांक्षा और आधुनिक जीवन की चुनौतियों से जूझने वाली चेतना के रूप में सामने आते हैं। भंडारी की लेखनी यह स्पष्ट करती है कि स्त्री केवल भावनात्मक या जैविक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी स्वतंत्र सोच और निर्णय क्षमता भी समाज को नए आयाम प्रदान कर सकती है।

उनकी कहानियों और उपन्यासों में परिवार तथा दांपत्य जीवन के भीतर उत्पन्न होने वाले तनाव, मूल्य-संघर्ष और संवादहीनता का गहरा विश्लेषण मिलता है। पति-पत्नी के रिश्तों में समानता के अभाव, परंपरा और आधुनिकता के टकराव तथा पीढ़ीगत अंतर के कारण उत्पन्न होने वाले संघर्षों को उन्होंने अत्यंत यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य केवल स्त्री-विमर्श तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पारिवारिक रिश्तों के अध्ययन का भी प्रामाणिक साधन बन जाता है। इस प्रकार, मन्नू भंडारी का कथा साहित्य यह प्रमाणित करता है कि स्त्री-विमर्श और पारिवारिक रिश्ते परस्पर जुड़े हुए सामाजिक आयाम हैं। इन्हें समझे बिना न तो स्त्री के संघर्षों की व्यापकता स्पष्ट हो सकती है और न ही आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की पूर्णता का आकलन संभव है।

बीजशब्द - स्त्री-विमर्श, पारिवारिक रिश्ते, मन्नू भंडारी, हिंदी कथा साहित्य, सामाजिक यथार्थ, दांपत्य जीवन।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श का प्रवाह 1960 के दशक के बाद तीव्रता से दिखाई देता है। इस दौर में भारतीय समाज तेजी से बदल रहा था—औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, आधुनिक शिक्षा और रोजगार की नई संभावनाओं ने स्त्रियों को परंपरागत घरेलू भूमिकाओं से बाहर निकलकर समाज में सक्रिय भागीदारी की ओर प्रेरित किया। साहित्य ने इस सामाजिक परिवर्तन को संवेदनशीलता से आत्मसात किया। अनेक महिला लेखिकाओं ने स्त्री के जीवनानुभवों, उसकी समस्याओं और संघर्षों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। इस कड़ी में मन्नू भंडारी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि उन्होंने स्त्री को केवल पीड़िता या दबी-कुचली इकाई के रूप में नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत व्यक्ति के रूप में चित्रित किया। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज में स्त्री की स्थिति और पारिवारिक जीवन के अंतर्विरोधों का यथार्थ दर्पण प्रस्तुत करते हैं।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने स्त्री को पारंपरिक रूढ़िगत ढाँचों से मुक्त कर स्वतंत्र सोच और निर्णय क्षमता वाली नायिकाओं के रूप में चित्रित किया। उनकी रचनाओं में स्त्री केवल गृहिणी या माँ की भूमिका तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अपने अस्तित्व, अधिकार और स्वाभिमान के लिए संघर्ष करती है। यही कारण है कि उन्हें हिंदी स्त्री-विमर्श की अग्रणी रचनाकारों में गिना जाता है। उनका साहित्य यह संदेश देता है कि स्त्री की पहचान केवल पारिवारिक दायरे में नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक स्तर पर भी स्थापित होनी चाहिए। *आपका बंटी,*

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

त्रिशंकु और *यही सच है* जैसी रचनाएँ इस बात की गवाही देती हैं कि भंडारी की स्त्री पात्र अपनी आंतरिक और बाह्य संघर्षशीलता के माध्यम से नए जीवन मूल्यों की खोज करती हैं।

पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं और बदलते सामाजिक परिवेश का यथार्थ भी मन्नू भंडारी की लेखनी में अत्यंत प्रखरता से अभिव्यक्त होता है। उनके साहित्य में पति-पत्नी के बीच संवाद का अभाव, पीढ़ीगत संघर्ष और स्त्री की स्वतंत्रता की चाह जैसे मुद्दों को कलात्मकता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। पारिवारिक जीवन को केवल व्यक्तिगत संबंधों का क्षेत्र मानने के बजाय, उन्होंने इसे सामाजिक संरचना और सत्ता-संबंधों का हिस्सा माना। यही कारण है कि उनके पात्र केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक सन्दर्भ में भी अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं। इस प्रकार, मन्नू भंडारी का कथा साहित्य स्त्री-विमर्श और पारिवारिक रिश्तों के परस्पर अंतर्संबंध को गहराई से प्रकट करता है और हिंदी साहित्य को नई दृष्टि प्रदान करता है।

विषय विवेचन

1. **स्त्री की अस्मिता और स्वाभिमान**

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनकी अस्मिता और आत्मसम्मान की खोज है। पारंपरिक हिंदी कथा साहित्य में स्त्री अक्सर त्याग, समर्पण और सहनशीलता का प्रतीक मानी जाती थी। किंतु भंडारी ने इस छवि को तोड़ते हुए स्त्री को उसके वास्तविक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संघर्षों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्री केवल संबंधों के आधार पर पहचानी जाने वाली इकाई नहीं है, बल्कि उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व और जीवन-दृष्टि है। यही दृष्टिकोण उनकी कहानियों को स्त्री-विमर्श की केंद्रीय धारा से जोड़ता है।

उनकी प्रसिद्ध कहानी **"यही सच है"** इसका सशक्त उदाहरण है। इस कहानी में नायिका *सुधा* के माध्यम से उन्होंने स्त्री की आत्मनिर्णय की आकांक्षा को अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया है। सुधा का जीवन दो पुरुषों—देव और मनोहर—के बीच बँटा हुआ है। देव के प्रति उसका पहला प्रेम है, जिसमें भावनात्मक गहराई और आत्मीयता है, जबकि मनोहर उसकी वर्तमान वास्तविकता है, जिसके साथ उसने विवाह कर स्थिर पारिवारिक जीवन स्वीकार किया है। लेकिन जब देव अचानक उसके जीवन में लौटता है, तब सुधा एक गहरे द्वंद्व का सामना करती है। यह द्वंद्व केवल दो पुरुषों के बीच चयन का नहीं है, बल्कि यह स्त्री की अपनी स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान की तलाश का द्वंद्व है (भंडारी, 2005, पृ. 36)।

इस कहानी का अंत अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुधा यह निर्णय लेती है कि वह किसी भी पुरुष के अधीन होकर नहीं जीएगी, बल्कि अपने जीवन की राह स्वयं चुनेगी। उसका यह निर्णय हिंदी कथा साहित्य में स्त्री की अस्मिता की पहली सशक्त उद्घोषणा के रूप में माना जाता है। यहाँ भंडारी ने यह संदेश दिया कि स्त्री का जीवन केवल पुरुष केंद्रित नहीं होना चाहिए। उसे यह अधिकार है कि वह अपनी शर्तों पर जी सके और अपने आत्मसम्मान के लिए संघर्ष कर सके।

इसी प्रकार उनकी अन्य रचनाओं में भी स्त्री की अस्मिता का स्वर प्रमुखता से उभरता है। उपन्यास **"आपका बंटी"** में *शकुंतला* नामक पात्र तलाकशुदा स्त्री है, जो पति-पत्नी के संबंध टूटने के बाद भी आत्मसम्मान के साथ जीना चाहती है। उसका संघर्ष केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि सामाजिक है, क्योंकि समाज उसे दोषी ठहराता है। लेकिन वह समाज की परवाह किए बिना अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने का साहस करती है। यह साहस स्त्री-विमर्श की दृष्टि से क्रांतिकारी है (गुप्ता, 2018, पृ. 105)।

भंडारी की कहानियों का यह पहलू स्पष्ट करता है कि अस्मिता और आत्मसम्मान केवल पुरुषों का विशेषाधिकार नहीं है। स्त्रियाँ भी स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं और उनके पास भी जीवन के विकल्प चुनने का अधिकार होना चाहिए। *त्रिशंकु* उपन्यास में यह विचार और भी गहराई से व्यक्त होता है, जहाँ पात्र अपनी सामाजिक और पारिवारिक सीमाओं को तोड़कर नए जीवन मूल्यों की तलाश करते हैं।

इस प्रकार, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान केवल एक साहित्यिक विषय नहीं है, बल्कि यह स्त्री की सामाजिक स्थिति और उसके अधिकारों पर गंभीर विमर्श है। उनकी कहानियाँ इस तथ्य को स्थापित करती हैं कि जब तक स्त्री को अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार नहीं मिलता, तब तक उसका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। इसलिए भंडारी की लेखनी स्त्री को "समान अधिकार संपन्न नागरिक" के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करती है।

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

2. दांपत्य संबंधों का यथार्थ

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने पारिवारिक और दांपत्य संबंधों को केवल सामाजिक संस्था के रूप में चित्रित नहीं किया, बल्कि उन्हें मानवीय संवेदनाओं और मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं के साथ जोड़ा। पारंपरिक हिंदी साहित्य में पति-पत्नी का संबंध अक्सर आदर्शीकृत रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है—जहाँ पति निर्णायक शक्ति का प्रतिनिधि होता है और पत्नी समर्पण और आज्ञाकारिता का प्रतीक। किंतु भंडारी ने इस रूढ़ छवि को तोड़ा और पति-पत्नी के बीच वास्तविक जीवन में उत्पन्न संवादहीनता, भावनात्मक दूरी और मूल्य-संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता से उजागर किया। उन्होंने यह दिखाया कि विवाह केवल सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों की गहनता और जटिलताओं से निर्मित संस्था है (शर्मा, 2015, पृ. 91)।

उनके उपन्यास **"आपका बंटी"** में दांपत्य संबंधों का यथार्थ अत्यंत मार्मिकता से चित्रित हुआ है। इस उपन्यास में *शकुंतला* और *अजय* का वैवाहिक जीवन टूट चुका है। दोनों के बीच संवाद का अभाव और परस्पर अविश्वास ने उनके रिश्ते को गहरी खाई में धकेल दिया है। तलाक के बाद उनका बेटा *बंटी* उस टूटन का प्रत्यक्ष शिकार बनता है। यहाँ भंडारी ने यह स्पष्ट किया है कि दांपत्य जीवन की असफलता केवल पति-पत्नी तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसका असर संपूर्ण पारिवारिक संरचना और बच्चों के मानस पर भी पड़ता है। बंटी का विद्रोह, असुरक्षा और मानसिक तनाव इस बात का सशक्त उदाहरण है कि दांपत्य संबंधों की दरारें पीढ़ियों तक असर डाल सकती हैं (भंडारी, 2005, पृ. 74)।

भंडारी ने यह भी दिखाया है कि पति-पत्नी के रिश्ते केवल बाहरी कारणों से नहीं टूटते, बल्कि आंतरिक संवाद की कमी और भावनात्मक असंवेदनशीलता भी इसका प्रमुख कारण है। *त्रिशंकु* उपन्यास में यह पहलू और गहराई से सामने आता है। पति-पत्नी दोनों अपने-अपने संसार में इतने उलझ जाते हैं कि वे एक-दूसरे से संवाद करने का समय और मनोभाव खो बैठते हैं। नतीजतन, उनके बीच अनकहे शब्दों की दीवार खड़ी हो जाती है। यह संवादहीनता धीरे-धीरे भावनात्मक दूरी में बदलती है और विवाह केवल औपचारिक ढांचे तक सीमित रह जाता है।

उनकी कहानियों में भी यह यथार्थ बार-बार सामने आता है। **"यही सच है"** की नायिका सुधा भले ही विवाहिता है, लेकिन उसका वैवाहिक जीवन भावनात्मक संतोष नहीं देता। पति-पत्नी के बीच सामंजस्य का अभाव उसे आंतरिक अकेलेपन की ओर धकेल देता है। यही कारण है कि जब उसका पहला प्रेम देव उसके जीवन में लौटता है, तो उसके भीतर पुराने भावनात्मक रिश्ते की स्मृति जाग उठती है। यहाँ मन्नू भंडारी ने यह स्थापित किया कि विवाह केवल कानूनी या सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि भावनात्मक निकटता और संवाद पर आधारित संस्था है। यदि यह संवाद टूट जाता है तो विवाह का ढाँचा खोखला हो जाता है (गुप्ता, 2018, पृ. 108)।

भंडारी का दृष्टिकोण यह भी स्पष्ट करता है कि दांपत्य जीवन में स्त्री और पुरुष दोनों समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। उन्होंने पति को एकमात्र दोषी नहीं ठहराया, बल्कि यह दिखाया कि बदलते समय में दोनों के बीच अपेक्षाओं और मूल्यों का संघर्ष रिश्तों में दरार पैदा करता है। यह प्रस्तुति उनके साहित्य को यथार्थवादी बनाती है और पाठक को यह सोचने पर विवश करती है कि विवाह संस्था को टिकाए रखने के लिए केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि परस्पर विश्वास, संवाद और सहानुभूति आवश्यक है।

इस प्रकार, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में दांपत्य संबंधों का यथार्थ महज पति-पत्नी की कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक समाज के बदलते मूल्यबोध और पारिवारिक संरचना का भी दर्पण हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विवाह का बंधन तभी सार्थक है, जब उसमें संवाद, समानता और भावनात्मक निकटता बनी रहे। अन्यथा यह बंधन केवल सामाजिक अनिवार्यता बनकर रह जाता है, जिसमें न तो व्यक्ति की अस्मिता सुरक्षित रहती है और न ही परिवार की स्थिरता।

3. पारिवारिक रिश्तों की जटिलताएँ

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में पारिवारिक रिश्तों की बदलती प्रकृति और उससे उत्पन्न जटिलताओं का गहन चित्रण मिलता है। विशेष रूप से संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे संक्रमण को उन्होंने बहुत ही यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया है। पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार को सुरक्षा, सहयोग और सामंजस्य का प्रतीक माना जाता था, लेकिन समय के साथ यह व्यवस्था टूटने लगी। भंडारी की कहानियों और उपन्यासों में यह टूटन स्पष्ट दिखाई देती है। *आपका बंटी* में तलाक के बाद परिवार का विखंडन केवल पति-पत्नी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बच्चे के

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

जीवन में भी गहरी दरार डाल देता है। इस उपन्यास में परिवार की टूटी हुई संरचना और उससे उपजे मानसिक तनाव का प्रभाव अगली पीढ़ी पर किस प्रकार पड़ता है, इसे बड़े ही संवेदनशील तरीके से चित्रित किया गया है (जोशी, 2008, पृ. 28)।

उनकी अन्य रचनाओं में भी यह पारिवारिक संक्रमण गहराई से उभरता है। *त्रिशंकु* और *यही सच है* जैसी कृतियों में उन्होंने यह दिखाया कि जब परिवार संयुक्त ढाँचे से अलग होकर एकल इकाई में बदलता है, तो व्यक्ति परंपरा और आधुनिकता के बीच उलझ जाता है। संयुक्त परिवार में आपसी सामंजस्य और सामाजिक सहयोग था, वहीं एकल परिवार में स्वतंत्रता तो मिलती है, लेकिन अकेलापन और असुरक्षा भी बढ़ जाती है। भंडारी के पात्र अक्सर इस दोराहे पर खड़े दिखाई देते हैं—एक ओर आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की चाह, तो दूसरी ओर स्थिरता और पारिवारिक सहयोग की आवश्यकता। यही द्वंद्व पारिवारिक रिश्तों को जटिल बनाता है और मन्नू भंडारी के साहित्य को आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में अत्यंत प्रासंगिक बनाता है।

4. सामाजिक रूढ़ियों का प्रश्नांकन

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री पर थोपे गए परंपरागत दायित्वों और पुरुष प्रधान मानसिकता का गहन विश्लेषण मिलता है। भारतीय समाज में लंबे समय तक स्त्री को केवल परिवार और गृहस्थी तक सीमित रखने की परंपरा रही है। उसका दायित्व गृहिणी, पत्नी और माँ की भूमिका निभाने तक ही माना गया। पुरुष के लिए निर्णय लेने, स्वतंत्र सोच रखने और सामाजिक दायरे को बढ़ाने के अवसर उपलब्ध रहे, जबकि स्त्री को इन अधिकारों से वंचित रखा गया। मन्नू भंडारी ने इस असमानता को अपनी कहानियों में बार-बार चुनौती दी। *यही सच है* और *आपका बंटी* जैसी रचनाओं में उनकी नायिकाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री केवल पारिवारिक ढाँचे में बँधकर जीने के लिए बाध्य नहीं है, बल्कि उसके भी अपने निर्णय, अपनी इच्छाएँ और अपना जीवन जीने का अधिकार है (वर्मा, 2010, पृ. 49)।

भंडारी की लेखनी में सामाजिक रूढ़ियों का प्रश्नांकन केवल बाहरी स्तर पर ही नहीं, बल्कि आंतरिक मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी दिखाई देता है। उनकी स्त्री पात्र यह स्वीकार नहीं करतीं कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था के बनाए गए नियम ही अंतिम सत्य हैं। उदाहरण के लिए, *त्रिशंकु* उपन्यास में स्त्री पात्र सामाजिक मान्यताओं और नैतिक मर्यादाओं से जूझते हुए भी अपने अस्तित्व की पहचान खोजने का प्रयास करती है। यह खोज इस बात का प्रतीक है कि स्त्री अब चुपचाप परंपरा को स्वीकार करने के बजाय उसका प्रतिरोध कर रही है। भंडारी की नायिकाएँ समाज से यह प्रश्न पूछती हैं कि क्यों पुरुष को स्वतंत्रता और स्त्री को दायित्व ही दिए जाते हैं। इस प्रकार, उनकी रचनाएँ सामाजिक रूढ़ियों पर गहरा प्रहार करती हैं और स्त्री-विमर्श को नई चेतना प्रदान करती हैं।

5. आधुनिक स्त्री का संघर्ष

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उनकी नायिकाएँ शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील दिखाई देती हैं। पारंपरिक समाज में स्त्री को आर्थिक रूप से पुरुष पर आश्रित माना जाता था, लेकिन भंडारी ने इस व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने दिखाया कि आधुनिक स्त्री केवल गृहिणी या पत्नी की भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है और आर्थिक स्तर पर भी आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रयासरत है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री की यह छवि आधुनिक सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। *आपका बंटी* की शकुंतला इस संघर्ष का सशक्त उदाहरण है। तलाक के बाद भी वह समाज की उपेक्षा और आलोचना को सहते हुए अपने जीवन को आत्मनिर्भर ढंग से जीने की कोशिश करती है (गुप्ता, 2018, पृ. 106)।

भंडारी ने यह भी दिखाया कि आधुनिक स्त्री का संघर्ष केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी है। वह समाज की रूढ़ियों, परिवार के दबाव और परंपरागत मान्यताओं से जूझते हुए अपने लिए नए रास्ते तलाशती है। *यही सच है* की सुधा यह स्पष्ट करती है कि स्त्री को अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेना चाहिए। इसी प्रकार *त्रिशंकु* की नायिका यह दर्शाती है कि सामाजिक मर्यादाओं और नैतिक मान्यताओं के बावजूद स्त्री को आत्मनिर्णय का अधिकार है। यहाँ भंडारी का दृष्टिकोण यह है कि आधुनिक स्त्री को केवल आत्मनिर्भरता ही नहीं, बल्कि आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर भी मिलना चाहिए।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

इस संघर्ष का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि स्त्री को समाज के भीतर अपनी पहचान बनाए रखने की आवश्यकता है। शिक्षा और रोजगार से उसे स्वतंत्रता तो मिलती है, लेकिन समाज अब भी उससे पारंपरिक अपेक्षाएँ रखता है। यही कारण है कि मन्नू भंडारी की नायिकाएँ लगातार द्वंद्व की स्थिति में जीती हैं—एक ओर आधुनिकता का आकर्षण और स्वतंत्रता की चाह, तो दूसरी ओर सामाजिक आलोचना और परिवार का दबाव। भंडारी ने इस द्वंद्व को संवेदनशीलता से उकेरते हुए यह संदेश दिया कि जब तक स्त्री को पूर्ण सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता नहीं मिलती, तब तक उसका संघर्ष जारी रहेगा।

समारोप

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य हिंदी कथा परंपरा में स्त्री-विमर्श और पारिवारिक रिश्तों का अत्यंत प्रामाणिक दस्तावेज है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास केवल स्त्री की पीड़ा या शोषण का बिंब प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उन्हें संघर्षशील, आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी रूप में चित्रित करते हैं। उन्होंने यह स्थापित किया कि स्त्री का जीवन केवल परिवार या दांपत्य संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके भी अपने अधिकार, आकांक्षाएँ और निर्णय लेने की स्वतंत्रता है। इस प्रकार, भंडारी का साहित्य स्त्री की अस्मिता को साहित्यिक विमर्श का केंद्र बनाने में सफल रहा।

उनकी रचनाओं में पारिवारिक रिश्तों की टूटन, पीढ़ीगत संघर्ष और संवादहीनता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। *आपका बंटी* में वैवाहिक विघटन और उसके परिणामों का चित्रण हो, या *यही सच है* में आत्मनिर्णय की आकांक्षा से जूझती स्त्री—इन सभी रचनाओं ने यह स्पष्ट किया कि परिवार और दांपत्य जीवन केवल औपचारिक संस्था नहीं, बल्कि संवेदनाओं, विश्वास और समानता पर आधारित संबंध हैं। जब यह संतुलन बिगड़ता है, तो परिवार की संरचना विखंडित हो जाती है और रिश्तों में असुरक्षा पनपने लगती है।

मन्नू भंडारी ने स्त्री को पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकालकर उसकी नई छवि गढ़ी—एक ऐसी छवि जिसमें वह अपनी इच्छाओं और संघर्षों के साथ समाज के सामने खड़ी होती है। शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रयत्नशील स्त्रियाँ उनकी रचनाओं में बार-बार दिखाई देती हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी आधुनिक स्त्री की चुनौतियों और आकांक्षाओं को समझने के लिए प्रासंगिक है। उनकी नायिकाएँ हमें यह याद दिलाती हैं कि स्त्री का संघर्ष केवल निजी जीवन का नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना को बदलने का भी संघर्ष है।

समग्र रूप से कहा जाए तो मन्नू भंडारी का कथा साहित्य हिंदी समाज और साहित्य दोनों के लिए मार्गदर्शक है। उन्होंने स्त्री-संवेदना, पारिवारिक रिश्तों की जटिलता और सामाजिक रूढ़ियों का यथार्थ चित्रण करते हुए हिंदी कथा साहित्य को नई दिशा प्रदान की। उनका लेखन न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। आज भी उनके साहित्य का अध्ययन यह सिखाता है कि स्त्री-विमर्श और परिवारगत संबंधों को समझे बिना हिंदी कथा साहित्य की पूर्णता का आकलन संभव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भंडारी, म. (2005). *यही सच है और अन्य कहानियाँ.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. भंडारी, म. (2008). *आपका बंटी.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. भंडारी, म. (2012). *त्रिशंकु.* दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
4. गुप्ता, स. (2018). *समकालीन हिंदी कथा साहित्य का विश्लेषण.* भोपाल: साहित्य सदन.
5. जोशी, अ. (2008). *हिंदी कथा साहित्य का आधुनिक परिप्रेक्ष्य.* जयपुर: विद्या प्रकाशन.
6. शर्मा, न. (2015). *आधुनिक हिंदी साहित्य में पारिवारिक संबंध.* वाराणसी: ज्ञानदीप प्रकाशन.
7. सिंह, र. (2012). *स्त्री-विमर्श और हिंदी कहानी.* इलाहाबाद: साहित्य भारती.
8. वर्मा, के. (2010). *हिंदी कहानी और स्त्री दृष्टि.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved